उससे हुआ नहीं है उसका नाम अनेकांत है। कर्म से विकार नहीं हुआ है, आत्मा से हुआ है उसका नाम अनेकांत है। अस्ति और नास्ति का नाम अनेकांत है। इससे भी हो और उससे भी हो, उसमें अनेकांत कहाँ रहा? वह तो फूदडीवाद हुआ। दो द्रव्य की एकता हुई। समझ में आया?

शास्त्र में दोनों नयों के व्याख्यान को समान और सत्यार्थ है, इसप्रकार से भी व्यवहार से है और व्यवहार से भी है ऐसे भ्रमरूप प्रवर्तने से तो दोनों नय जानने योग्य करना नहीं कहा है। इसप्रकार ग्रहण करने योग्य नहीं कहा है। देखो, यह बात वर्तमान में बहुत फेरफार चाहती है। लोग नय के नामपर और शास्त्र में लिखावट आये तो कहे, ये लिखा। किस नय का कथन है? व्यवहार या निश्चय? व्यवहार का कथन निमित्त का ज्ञान कराने को (किया है), परमार्थ बात वह व्यवहार नहीं करता है। ऐसा न जाने तो उसे दोनों सत्य, दोनों निश्चय और व्यवहार आदरणीय है (ऐसा माननेपर) वह मिथ्यादृष्टि होता है और भ्रमणा में जाता है।

(श्रोता :-- प्रमाण वचन गुरुदेव!)

वीर सं.-२४८८, चैत्र सुद-११, रविवार,
दि. १५-४-१९६२,
सातवाँ अधिकार, प्रवचन नं. १७

यह, मोक्षमार्गप्रकाशक का सातवाँ अध्याय है। जैन मतानुयायी मिथ्यादृष्टि का स्वरूप। सूक्ष्म विषय है। अनादि काल का तकरार का विषय है। तकरार को टालने का विषय है। कोई कहता है, शास्त्र में सब कथन आये वह सब आदरणीय हैं। क्योंकि वह सब तो भगवान द्वारा कहे गये हैं। समझ में आया? शास्त्र में सब कथन आया वह सब आदरणीय है। व्यवहारनय से कथन आया हो वह भी आदरणीय है और निश्चय से आया हो वह भी आदरणीय है, ऐसा कहते हैं। उसका समाधान करते हैं, उसका समाधान करते हैं।

'**जिनमार्ग में कहीं तो निश्चयनय की मुख्यता लिये व्याख्यान है।**' समझ में आया? वह पैरेग्राफ हो गया है, फिर से (लेते हैं)। प्रथम पंक्ति उत्तर की। '**जिनमार्ग**

में कहीं तो निश्चयनय की मुख्यता लिये...' स्व-आत्मा को पर-परमाणु को, स्वाश्रित जितने निश्चय के कथन आवे, उसकी मुख्यता सहित कथन हैं सो तो सत्य हैं। समझ में आया? यह बड़ी तकरार अभी निश्चय और व्यवहार की (चलती है)। समझ में आया?

देखो, प्रश्न ऐसा था कि, '**यदि ऐसा है तो जिनमार्ग में दोनों नयों का ग्रहण करना कहा है, सो कैसे?**' ऐसा शिष्य का प्रश्न है। आप तो ऐसा कहते हो कि जितने शास्त्र में, आत्माश्रित के अलावा, पराश्रित जितने कथन आत्मा में आये वह सब व्यवहार के कथन 'वह ऐसे नहीं है, वह ऐसे नहीं है' ऐसा आप कहना चाहते हो। जैसे, अंजन चोर को निःशंकता हुई और शास्त्र कहे कि वह समकिती है। ऐसा शास्त्र में आता है। तो उसको भी ग्रहण करना और इसे भी ग्रहण करना, दोनों वीतराग के वचन हैं। समझ में आया? कोई जैन प्रभावना रानी ने की। कौन? हरिषेण, हरिषेण चक्रवर्ती। उसने बड़ी प्रभावन करी, उसको भी समकिती गिनने में आया है। है तो वह सब व्यवहार, राग की क्रिया और शुभ की क्रिया है, फिर भी शास्त्रकार उसे समकिती, वैसे व्यवहार के कारण कहते हैं। ऐसे व्यवहार के कथन शास्त्र में बहुत आते हैं। तो शास्त्र में कहा है कि व्यवहार को भी ग्रहण करना और जो निश्चय आत्माश्रित लाभ होने की बात हो कि आत्मा का विकार आत्मा से होता है और विकार से, पुण्य से आत्मा को धर्म होता नहीं, ऐसी जो निश्चय की सच्ची बात हो, उसको बराबर माननी और व्यवहार की बात हो उसे बराबर माननी नहीं, ऐसा आप कहते हो। तो शास्त्र में तो दोनों नयों को ग्रहण करने की बात चलती है। उसका उत्तर। इसकी बड़ी तकरार है। समझ में आया?

'**जिनमार्ग में...**' वीतराग परमात्मा के पंथ में '**कहीं तो निश्चय...**' यानी स्व द्रव्य की स्वतंत्रता का द्रव्य, गुण और विकार या अविकारी पर्याय के कथन चले हो, वह व्याख्यान सत्यार्थ ऐसे ही ऐसा जानना। मुख्यता सहित जहाँ कथन हो, निश्चय का, स्वआश्रय, परमाणु को परमाणु का स्वआश्रय, परमाणु परमाणु के कारण गति कर रहे हैं, कर्म कर्म के कारण गति कर रहे हैं, आत्मा आत्मा के कारण गति और राग-द्वेष कर रहा है, ऐसा जो कथन निश्चय का आवे, उसके सहित जो व्याख्यान है वह सत्य है ऐसा जानना। समझ में आया?

आत्मा अपने ही भाव के कारण नर्क में जाता है, आत्मा अपने ही भाव के कारण स्वर्ग में जाता है, आत्मा अपने ही भाव के कारण पशु में और मनुष्य में जाता है। ऐसा कथन जहाँ हो उसे सत्य जानना। समझ में आया? कि बराबर, वह अपने कारण ही काम कर रहा है। और जहाँ अकेला आत्माश्रित निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या हो कि वीतराग शुद्धोपयोग आत्मा को वह एक ही मोक्ष का मार्ग है।

मूलचंदजी! समझ में आता है?

निश्चय भगवान आत्मा, शरीर-वाणी की क्रिया से रहित, पुण्य और पाप के अशुद्धउपयोग के व्यापार से रहित और अकेला निजानंद प्रभु, अखंड आनंद अविकारी शांतरस से भरा हुआ है, उसको उपयोग उसमें लगकर जिसमें शुभ-अशुभोपयोग रहे नहीं और शुद्धोपयोग आत्मा में हो वह एक ही मोक्ष का मार्ग है। अर्थात् आत्मा में जितनी शुद्ध श्रद्धा आत्मा की हो, आत्मा का शुद्ध ज्ञेय का ज्ञान हो, आत्मा को ज्ञेय करके उसमें स्थिर हो, ऐसा वीतरागभाव ही एक मोक्षमार्ग है, ऐसी जहाँ निश्चय से व्याख्या आयी, उस बात को वैसे ही मान लेना। वह बात ऐसे ही है, वह बात ऐसे ही है।

'**कहीं व्यवहारनय की मुख्यता लिये व्याख्यान है,...**' शास्त्र में इतने कथन (आते हैं), व्यवहारनय अर्थात् एक तत्त्व को छोड़कर दूसरे तत्त्व के साथ मिलावट करके बात करता है। एक तत्त्व के कारण दूसरे तत्त्व में कार्य होता है, ऐसी बात करे। एक की दशा दूसरे के कारण दशा उत्पन्न होती है, ऐसा शास्त्र में व्यवहारनय की मुख्यता सहित कथन है। '**उसे 'ऐसे है नहीं,...**' ऐसा नहीं है ऐसा जानना। नवनीतभाई!

मुमुक्षु :-- फिर से।

उत्तर :-- फिर से, ए.. सोभागचंदभाई! हमारे मंडल के अग्रेसर हैं। समझ में आया? क्या कहा?

जहाँ-जहाँ व्यवहारनय का कथन अर्थात् आठ कर्म के कारण जीव रखड़ता है ऐसा कथन आया हो, वह व्यवहार की मुख्यता से कथन है। यानी कि ऐसे नहीं है। कर्म के कारण वह रखड़ता नहीं, परन्तु आत्मा स्वयं के अज्ञान अभिप्राय और विपरीत श्रद्धा से रखड़ता है, ऐसा उसमें अर्थ समझना। कहीं ऐसा कहा हो कि कर्म का उदय घटे, कर्म कुछ मंद पड़े, शिथिल हो तो आत्मा को अच्छे परिणाम कर्म का परिणाम करने का अवसर मिले। इसप्रकार शास्त्र में कहीं कथन व्यवहारनय नाम पर की अपेक्षा का निमत्तपने का ज्ञान कराने को ऐसे कथन आये हो, उसको समझना कि कर्म का उपशम हुआ इसलिये समकित हुआ, ऐसा नहीं है। ऐसा नहीं है। यहाँ अपने कारण से समकित हुआ है, उस वक्त वहाँ कर्म का उपशम था, वह निमित्त देखकर व्यवहारनय ऐसा कथन करती है।

कर्म का ज्ञानावरणीय के उघाड़ के कारण आत्मा में ज्ञान का विकास होता है, ऐसा कथन व्यवहारनय की मुख्यता से शास्त्र में आवे। ऐसे नहीं है। शास्त्र कहे ऐसे भी नहीं है? किसको ना कहनी? मगनभाई! मगनभाई एक बार लाये थे, टोडरमल कहते हैं, कर्म का उदय हो ऐसा हो। एक बार प्रश्न लाये थे न? उसमें लिखते हैं,

कर्म के कारण... वह तो पहले कह गये हैं कि एक द्रव्य अन्य द्रव्य के आधीन तीन काल तीन लोक में नहीं है। वह तो इसमें भी आता है, देखो! समझ में आया? यह है, २५७ पृष्ठ पर बीच में पंक्ति है। '**कोई द्रव्य किसी द्रव्य के आधीन है नहीं।**' बीच में है, पहले पैरेग्राफ की आखिर से छठवीं पंक्ति, नीचे से पहले पैरेग्राफ की। '**कोई द्रव्य किसी द्रव्य के आधीन है नहीं।**' २५७ पृष्ठ। है भाई? नेमचंदभाई! है? मगनभाई! है? नीचे से छठवीं पंक्ति। '**आत्मा परद्रव्य का कर्ता-हर्ता हो जाये।**' यदि पर को ग्रहण करने की और त्याग करने की शक्ति हो तो परद्रव्यरूप हो जाये। '**कोई द्रव्य किसी द्रव्य के आधीन है नहीं। आत्मा अपने भाव रागादिक हैं उन्हें छोड़कर वीतरागी होता है; इसलिये निश्चय से वीतरागभाव ही मोक्षमार्ग है।**' समझ में आया?

शास्त्र में व्यवहार का कथन ऐसा आये कि कर्म के क्षयोपशम के कारण आत्मा में ज्ञान की कमी-बेसी, कमी-बेसी समझते हो? कम-ज्यादापना। उसकी भाषा में। उसकी भाषा क्या होगी? ज्ञान में कमी-बेसी का जो विकास दिखे वह ज्ञानावरणीय कर्म के कारण है, ऐसा व्यवहारनय की मुख्यता से शास्त्र में कथन आवे। परन्तु ऐसे नहीं है। ऐसे नहीं है। किन्तु वहाँ आत्मा की योग्यता से ज्ञान का हिनाधिकता हुई, वहाँ निमित्त कौन था उसको देखकर निमित्त का कराने को ऐसे कथन किये गये हैं।

मुमुक्षु :-- ...

उत्तर :-- पढ़नेवाले की जिम्मेदारी है, उसे समझना पड़ेगा कि निश्चय और व्यवहार क्या है। कहो, समझ में आया? हाथी का दाँत बाहर के बड़े दिखे, अन्दर के अलग हैं, नक्की करना पड़ेगा कि चबाने के दाँत कौन-से हैं? इसलिये उसमें हाथी की गलती नहीं है कि तूने क्यों ऐसे दाँत रखे? समझ में आया? चंदुभाई! उसने बाहर के बड़े क्यों रखे और चबान के अन्दर क्यों रखे? आचार्यों की व्यवहारनय की पद्धति के कथन हाथी के बाहर के दाँत जैसे हैं। समझ में आया? और निश्चय यथार्थ बात- स्वद्रव्य अपनी पर्याय का स्वतंत्र कर्ता है और आत्मा अपने शुद्ध वीतरागभाव से आत्मा का साधन साधकर मोक्ष प्राप्त करता है और राग एवं निमित्त से तीन काल में प्राप्त नहीं करता। ऐसे कथन हो उसको सत्य जानना और सत्समागम से समकित हो, सत्समागम से ज्ञान हो, अच्छा संग हो तो चारित्र की शुद्धि हो, अच्छा संग हो तो अच्छे परिणाम हो, ऐसे कथन जहाँ शास्त्र में आवे उसको ऐसे समझना कि वह ऐसे नहीं है। है? देखो! है उसमें? देखो। इसमें लिखा है उसकी व्याख्या चलती है। पंडित और त्यागी के नामपर ऐसी गड़बड़ी करते हैं...

मुमुक्षु :-- ...

उत्तर :-- यह अनेकांत है। अनेकांत यानी क्या? परस्पर विरुद्ध दो शक्तियों का प्रकाशित होना, वस्तु में वस्तुत्व की निष्पादक शक्तियाँ। वस्तु में वस्तुत्व की निष्पादक परस्पर विरुद्ध दो शक्तियों का प्रकाशित होना उसको भगवान अनेकांत कहते हैं। अर्थात्.. यह तो सिद्धांत कहा, कहाँ गरज है जगत को? सोभागचंदभाई! पढ़ने की निवृत्ति कहाँ है? ऐसे ही भक्ति से धर्म हो जाता हो और मोक्ष हो जाता हो... समझे? बराबर है ताराचंदजी?

भगवान! शास्त्र में ऐसा आवे, हे नाथ! हम तो आप की भक्ति को मुक्ति से अधिक मानते हैं। समझ में आया? हमें तो आप की भक्ति हो तो हमें मुक्ति भी नहीं चाहिये। उसका अर्थ कि ऐसा नहीं है, ऐसा नहीं है। परन्तु मुक्त होने का शुद्धोपयोग की वीतरागदशा साक्षात् मोक्ष का कारण है, उसमें भक्ति के ऐसे परिणाम आते हैं, वह निमित्त का ज्ञान कराने को, मुक्ति से हमें भक्ति अधिक है, ऐसा कहने में आता है। मूलचंदजी! देखो! अभी यहाँ बाज़ार में भक्ति जमेगी। अभी, रूपचंदजी की आवाज़.. और भाई कौन? रतनचंदजी, ताराचंदजी तीनों की आवाज़ की गुँज उठती है। भाई की आवाज़। कहो, समझ में आया? देखो अभी बोला गया, इनकी आवाज़। ऐसे नहीं है। वह व्यवहारनय के कथन हैं कि इनकी आवाज़, इनका कण्ठ, ऐसा बोलने में आये, ऐसे नहीं है। परन्तु उस काल में कण्ठ की क्रिया काल में जीव रागवाला कौन था, उसका निमित्त का ज्ञान कराने को, इसकी आवाज़ है ऐसा कहने में आता है। समझ में आया? हमारे मूलचंदजी के लिये स्पष्ट करना चाहिये। बराबर आये हैं, डॉक्टर और मूलचंदजी अब बराबर जिज्ञासा करते हैं कि यह क्या है? इतने साल से साथ में आते हैं। (संवत) २००६ से, बारह वर्ष हुए। समझ में आया?

प्रवचनसार में ऐसा आता है, ओहो..! एक ठंडी छाछ हो, छाछ समझे? मठ्ठा, मठ्ठा। मठ्ठा हो वह ठंडे घर में रहे तो बहुत ठंटा रहे और उसमें आईसक्रिम डाले तो बहुत ठंडा हो जाये। शास्त्र में पाठ है, प्रवचनसार। समझे? वह ऐसे नहीं है, ऐसा समझना। वह छाछ की स्वयं की ठंडी अवस्था होने के लायक थी, तब निमित्त घर का ठंडा कोना और आईसक्रिम निमित्त था, उतना ज्ञान कराने को उससे ठंडा हुआ और रहा, ऐसा कहने में आता है। कोने में रहकर आईसक्रिमा डाला इसलिये वह छाछ ठंडी रही, वह बात ऐसे नहीं है। नवनीतभाई! समझ में आया?

अथवा उसका सिद्धांत उतारा है। कोई प्राणी धर्मात्मा, धर्मार्थी अपने जैसे गुणवाले के संग में रहे तो उसके गुण सुरक्षित रहे, और अपने गुण से अधिक गुणवाले के संग में रहे तो गुण अधिक हो। प्रवचनसार की यह व्याख्या है। शास्त्र की बात करते हैं, शास्त्र की भाषा कहकर बात होती है। समझ में आया? तो उसमें ऐसा समझना..

देखो! '**कहीं व्यवहारनय की मुख्यता लिये व्याख्यान है,...**' व्यवहारनय की मुख्यता से उसमें कथन है। '**उसे 'ऐसे नहीं है**' ऐसा कहना नहीं चाहते हैं। कहनेवाले का वह आशय नहीं है। नरभेरामभाई! व्यवहारनय की मुख्यता सहित है वह ऐसे नहीं है, किन्तु '**निमित्तादि की अपेक्षा उपचार किया है--ऐसा जानना।**' वह तो उस वक्त, ठंडी छाछ के समय कोना ठंडा था, आईसक्रिम ठंडा था, उसका ज्ञान कराने को (कहा)। अच्छे गुणी का संग था इसलिये गुण टिके, वह कौन गुणी था उसका ज्ञान कराने को वह बात थी। समझ में आया?

धर्म का आधार, आचार्य, उपाध्याय बड़े धर्म के, शासन के आधार हैं ऐसा शास्त्र में आये। समझ में आया? धर्म का आधार, धर्मी की पर्याय का आधार उसका द्रव्य है। लेकिन उसमें शासन के नायक आचार्य, उपाध्याय, धर्मी कौन मुख्य थे, उसका निमित्त का ज्ञान कराने को वह शासन भगवान ने कहा, भगवान के कारण शासन चला, भगवान ने स्थिर स्थापित किया और भगवान के कारण स्थिर चला। और आचार्य अच्छे हों तो बड़ा संघ अच्छा हो, आचार्य खराब हो तो संघ अच्छा न हो, ऐसा शास्त्र में कथन, भगवती आराधना में हज़ारों कथन आवे। किन्तु ऐसा नहीं है, ऐसा समझना। मगनभाई! उस जीव की धर्म की योग्यता अपने कारण से प्रगट करी वह सच्ची। उसमें निमित्त का ज्ञान कराने को उस काल में निमित्त कौन था उसका ज्ञान कराने को वह कथन चलता है। परन्तु उस कथन का अर्थ ऐसा नहीं है। व्यवहार कहता है ऐसा नहीं है।

आचार्य कहते हैं कि हमने व्यवहार से कहा उसको तू 'ऐसा नहीं है' ऐसा तू मानना। मगनभाई! ऐसा कहा कि नहीं? नेमचंदभाई! क्या कहा? हम व्यवहारनय से एक तत्त्व के द्रव्य-गुण-पर्याय की बात के सिवा परद्रव्य के द्रव्य-गुण-पर्याय मिलाकर कहीं दूसरे में मिलावट करके बात कही हो तो तू समझना कि हमने कहा है ऐसा नहीं है। हमारा आशय ऐसा कहने का नहीं है। उस वक्त निमित्त का ज्ञान कराने को वह शैली शास्त्र में (आती है)। हज़ारों शास्त्र के ऐसे कथन, मूल दिगंबर सनातन संत द्वारा कहे गये शास्त्र, उसमें भी व्यवहार के कथन बहुत आते हैं। समझ में आया?

अंतराय कर्म मार्ग दे तो मैं दान सकूँ, दान का भाव, भाव कर सकूँ, वह सब निमित्त के कथन हैं। व्यवहारनय का कथन है वह, ऐसे नहीं है, परन्तु स्वयं जब राग मंद करके दान का भाव करता है, तब दानांतराय में उघाड़ की योग्यता उसमें उसके कारण से थी, इतना निमित्त कर्म बताने को ऐसा कहने में आया है। समझ में आया?

ब्रह्मचर्य। शास्त्र में ऐसा आये कि यदि नव वाड़ और स्त्री का संग न हो तो

ब्रह्मचर्य का अच्छा पालन हो। समझ में आया? बहुत भोजन न खाये, दूधापाक-पूड़ी आदि न ले, सादा भोजन हो, आदि हो और स्त्री का संग न करे, एकांतवास में रहे तो उसे ब्रह्मचर्य का पालन हो। ऐसा कथन किया हो वहाँ ऐसा समझना कि ऐसे नहीं है। अपनी लायकात के कारण जो ब्रह्मचर्य का भाव रहा है तब निमित्त की चीज साथ में कौन थी, उसका ज्ञान कराने को ऐसा कथन करने में आया है। समझ में आया? अनेकांत का चलता है, देखो न यह। उससे हो और दूसरे से न हो, उसका नाम अनेकांत कहने में आता है। समझ में आया इसमें?

जहाँ-जहाँ कहने में आया हो, अहो..! भगवान की दिव्यध्वनि सुने तो उसे सच्चा ज्ञान हो। तब व्यवहारनय ऐसा कहे, तब आचार्य कहते हैं कि हम कहते हैं कि ऐसा नहीं है। मात्र सच्चा ज्ञान होने के समय दिव्यध्वनि की उपस्थिति थी इसलिये वह कथन करने में आया है। अब अनेकानंत, उसका ज्ञान उससे हुआ है और दिव्यध्वनि से नहीं हुआ है। आहा..हा...! दो विरुद्ध शक्ति का प्रकाशित होना। अस्ति-उससे हुआ और इससे नहीं हुआ, ऐसा नास्ति धर्म उसमें है। समझ में आया?

एक द्रव्य अथवा आँख का ऐसा अधिकार आता है कि अन्य पदार्थ का यहाँ स्पर्श हो तो सुने, सूंघे, चखे और आँख को बिना स्पर्श ही आँख देखे। स्पर्श करने की बात ही झूठी है। 'पुट्ठं जाणइ सदं' ऐसा शब्द शास्त्र में आये। स्पर्श करने पर शब्द का ज्ञान आत्मा में हो। आँख के लिये ऐसा नहीं है। अग्नि और बर्फ दूर पड़ा हो तो ज्ञान हो, उसको स्पर्श नहीं करती और यह स्पर्श करता है। उसकी व्याख्या क्या? आत्मा को शब्द स्पर्श करता है, यह बात झूठी है। आत्मा को शब्द स्पर्श करता है, अरे..! कान को शब्द स्पर्श करता है, वह बात ऐसे नहीं है। परन्तु स्वयं के शब्द के ज्ञान के काल में स्वयं से ज्ञान हुआ, उसमें शब्द को निमित्त देखकर और समीप शब्दों को देखकर, स्पर्श करके ज्ञान होता है, शब्द को स्पर्श करे तो ज्ञान होता है, ऐसा व्यवहार करने में आया है। परन्तु ऐसा नहीं है। नरभेरामभाई! यह समझे बिना कितना समय यूँ ही व्यतीत किया। अभी भी निवृत्त भी नहीं होते हैं ... करने को।

मुमुक्षु :-- ...

उत्तर :-- खुशी होती है, लेकिन यहाँ ... दो दिन से व्यवहार की बात करते हैं। बाहर जाते ही परिणाम में आकुलता, नटु और बटुक। कहो, समझ में आया? यहाँ कहते हैं,.. ये तो दृष्टान्त है, हाँ! वह कोई बात स्वलक्ष्य में नहीं लेते हैं, बहुत होशियार है।

यहाँ कहते हैं, अनेकांत उसे कहते हैं कि आत्मा को राग, आत्मा की कमजोरी

राग होता है और कर्म से नहीं होता है, उसका नाम अनेकांत है। कुछ लोग कहते हैं कि आत्मा को विकार होता है उसका कारण क्या है? वह कमजोरी स्वयं कारण है। कमजोरी का कारण क्या? कि आपना विपरीत पुरुषार्थ। विपरीत पुरुषार्थ का कारण क्या? कमजोरी। अरे..! वहीं के वहीं बात आ गयी। वहीं की वहीं बात आ गयी, लेकिन कुछ दूसरा तो कहो। मगनभाई! ऐसा कहते हैं चक्रम, क्या कहते हैं? चक्र, चक्र घुम घुमकर वहाँ आया तेरा। कमजोरी, कमजोरी का कारण? पुरुषार्थ की विपरीतता, पुरुषार्थ की विपरीतता का कारण उस वक्त का स्वयं का पुरुषार्थ विपरीत है इसलिये। वह तो वही बात हुई। अब, कर्म को अन्दर डाल कि कर्म के कारण विकार होता है, तो उसको अनेकांत कहने में आये, ऐसा मूढ जीव मानता है। किन्तु ऐसा है नहीं। विकार स्वयं की कमजोरी के कारण उस काल की विकार की पर्याय होने की, पर्याय के कारण पर्याय हुई है, निमित्त के कारण नहीं, द्रव्य-गुण के कारण भी नहीं। उस बात को यथार्थ और मुख्यपने कही हो तो वह सत्य है। समझ में आया?

दूसरे प्रकार से, आत्मा में धर्म की पर्याय प्रगट हो, सम्यग्दर्शन आत्मा के आश्रय से (प्रगट हो), उसमें मिथ्यात्व की पर्याय का नाश हुआ इसलिये समकितपर्याय हुई वह भी व्यवहार का कथन है। समझ में आया? सम्यग्दर्शन की पर्याय निज द्रव्य के आश्रय से स्वयंसिद्ध पूर्व पर्याय के व्यय की अपेक्षा रखे बिना स्वयंसिद्ध हुई है। आहाहा..! बहुत सूक्ष्म बात, भाई! ये निश्चय और व्यवहार। शास्त्र में यह कहा है न? शास्त्र में व्यवहार की बातें बहुत कही है, बोल तुझे क्या कहना है? भाई! आप आओगे तो सुनने को मिलेगा और सुनोगे तो ज्ञान होगा, ऐसा बोलने में आये, लो। आप सुनो, आओ, देखो तो सही, ऐसा कहने में आये। उसका अर्थ क्या? क्या यहाँ आया और शब्द सुने इसलिये ज्ञान होता है?

मुमुक्षु :-- घर बैठे क्यों नहीं हुआ?

उत्तर :-- घर बैठा हो तब दूसरी पर्याय की योग्यता है। यहाँ उसकी पर्याय की वर्तमान योग्यता के कारण उसको ज्ञान होता है। शब्द से और बाहर से होता है, ऐसे व्यवहार के कथन ऐसे नहीं है, किन्तु ज्ञान के काल में शब्द का निमित्त था उतना ज्ञान कराने को वह कथन चले हैं। बहुत सूक्ष्म बात भाई! समझ में आया?

भगवान के समीप तीर्थंकरगोत्र का बन्ध होता है। लो, गोम्मटसार में कथन, गोम्मटसार में कथन है वह सब लाकर आगे करते हैं। लो यह गोम्मटसार, नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती (कहते हैं), समकिती जीव हो, आत्मज्ञानी हो, तो भी अकेला तीर्थंकरगोत्र नहीं बाँधेगा। उसको कोई तीर्थंकर या श्रुतकेवली और केवली के समीप बैठा होगा उसकी सभा में, तब तीर्थंकरगोत्र बाँधेगा। यानी कि ऐसे जो कथन कहे हो, वह ऐसा नहीं है,

परन्तु अपने भाव जब उस प्रकार के तीर्थंकरगोत्र बाँधने के थे, उस काल में यह निमित्त ऐसी चीज थी उसका ज्ञान कराने को कहा है। उसके कारण भाव आया है और नहीं तो नहीं आता, ऐसा है नहीं। धरमचंदजी! ओहो..!

'**व्यवहारनय की मुख्यता लिये व्याख्यान है,...**' ऐसे ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, ऐसे अशाता के उदय के कारण शरीर में रोग आया, ऐसा शास्त्र में कथन आये। अशाता के उदय के कारण शरीर में रोग आये, आदि प्रतिकूलता, स्त्री मर जाये आदि हो ऐसे कथन शास्त्र में आये उसको उस वक्त अशाता का निमित्त और उस काल में वह कार्य होनेवाला था उसे अशाता का निमित्त देखकर बात कही है। परन्तु अशाता के कारण यह होता है, वह बात भी सच्ची नहीं है। ओहोहो..! यह पुण्य बाँधा था इसलिये पैसा आया, वर्तमान राग किया और पैसा मिला वह बात तीनों काल में झूठी है। परन्तु पूर्व का पुण्य था, शाता के रजकण बँधे थे इसलिये पैसा आया वह भी व्यवहारनय का कथन है। क्योंकि शाता के परमाणु भिन्न और पैसा आया उसके परमाणु भिन्न है। वह परमाणु पैसा आया उसको कहीं शाता खींचकर नहीं लाये हैं। पैसा आने के काल में शाता का निमित्त देखकर ऐसा कहा, वहाँ ऐसा समझना कि शाता से आये हैं ऐसा नहीं है। ऐसा नहीं है। परन्तु आने के काल में वह कर्म निमित्त था उसका ज्ञान कराने को ऐसे कथन चले हैं। समझ में आया? यह ऊँची बात है। क्या कहते हैं आप की? मास्टर की कुछ कहते हैं न? मास्टर की, सब को लगे।

निश्चय और व्यवहार। द्रव्यानुयोग, चरणानुयोग, करणानुयोग या कथानुयोग जहाँ-जहाँ परद्रव्य के आश्रय से अन्य द्रव्य के कारण-कार्य की बात करी हो, वहाँ समझना कि ऐसा नहीं है, ऐसा नहीं है। वह तो उस वक्त का निमित्त की उपस्थिति यानी मौजूदगी देखकर बात कही है। और निमित्त को भी, इस उपादान में कार्य होता है इसलिये निमित्त को आना पड़ता है ऐसा भी नहीं है। वह तो उसके कारण वह और इसके कारण यह। इस प्रकार व्यवहारनय की मुख्यता सहित (व्याख्यान है)।

दूसरी बात, भगवान की वाणी गणधर आये इसलिये छूटी। सुना है कि नहीं? ६६ दिन बँध रही व्याख्या। महावीर परमात्मा को केवलज्ञान हुआ, ६६ दिन व्याख्यान बँध रही। गौतमस्वामी को जब इन्द्र ब्राह्म का रूप लेकर लाये, सभा में वाणी निकली, ऐसा कहने में आता है कि गणधर होने के लायक जीव आया इसलिये वाणी निकली। ऐसा नहीं है। परन्तु वाणी निकलने के काल में वाणी निकलनेवाली थी वह बराबर है, उसमें निमित्त गणधर का देखकर उसके कारण हुई ऐसा कहने में आता है। परन्तु ऐसा है नहीं। समझ में आया? शास्त्र बदल नहीं जाता, शास्त्र को जो कहना है वह

बात रह जाती है। शास्त्र का कहने का आशय है वह रह जाता है। कथन की पद्धति है व्यवहारनय की, उपचार से पर से सब कथन आये। समझ में आया? किन्तु वह बात ऐसे नहीं है ऐसा उसे जानना चाहिये। व्यवहारनय की मुख्यता सहित (व्याख्यान है)। समझ में आया?

उसका प्रश्न उठा था पहले, गणधर का। क्यों गणधर आये तब वाणी निकली? अरे.. सुन तो सही प्रभु! वहाँ ऐसा चला है कि भगवान! इन्द्र इस गणधर को पहले क्यों नहीं लाये? धवल में अधिकार चला है। गणधर को उस काल में क्यों लाये, इन्द्र पहले क्यों नहीं आये? कि गणधर की आने की काललब्धि नहीं थी। धवल में ऐसा आता है, हाँ! नेमचंदभाई! भगवान की वाणी उस वक्त ही क्यों निकली? वह आये इसलिये। पहले क्यों नहीं लाये? पहले आने की लायकात उनकी नहीं थी। उसकी लायकात से गणधर आये हैं। इन्द्र से आये वह निमित्त का कथन है। ऐसा है नहीं। समझ में आया? वह बड़ी चर्चा चली थी। नहीं, ऐसा आप्तवाक्य है कहीं? गणधर आये और वाणी नहीं छूटी अने अपने कारण छूटी, ऐसा आप्तवाक्य है? यह किसकी बात चलती है? गणधर आये और वाणी छूटी वह व्यवहार का कथन है। ऐसा नहीं है, परन्तु वाणी छूटने के काल में निमित्त कौन था उसका ज्ञान कराने को वह कथन चला है। आहाहा..! बहुत फेर। निश्चय-व्यवहार की ऐसी गड़बड़ी, व्यवहार की बात भी सच्ची और निश्चय की भी सच्ची। दोनों बात सच्ची माने वह बड़ा मूढ और भ्रमणा में पड़ा है। समझ में आया?

पर की दया पाल सकता है, आत्मा यदि भाव करे तो बराबर पाल सके ऐसा व्यवहार का कथन आये। तीन काल में पर की दया आत्मा पाल सकने की ताकात आत्मा रखता नहीं। आत्मा भाव करे दया का, परन्तु पर को बचा सके और सुख-दुःख दे सके, तीन काल में आत्मा की ताकात नहीं है।

मुमुक्षु :-- चरणानुयोग में..

उत्तर :-- चरणानुयोग में कहते हैं उसकी तो बात चलती है। चरणानुयोग में कहे कि इसने इसको मदद की, ऊपर आया, साधर्मी को साधर्मी की मदद करनी, उसके कारण धर्म टिके, वात्सल्यता करनी, प्रभावना करनी, पर का स्थितिकरण करना, धर्म से डिगते का स्थितिकरण करना ऐसा शास्त्र में आये। वह स्थितिकरण तो उसके कारण होता है तब करनेवाला कौन था उसका ज्ञान कराने को ऐसे कथन चले हैं। नेमचंदभाई! शास्त्र की बात बदल जाती है, ऐसा कहते हैं। शास्त्र की बात इस तरह रहती है। वह सब निमित्त के स्थान में रहता ही है। नवरंगभाई! क्या करना?

पानी छान के पीना, सात बार गालना, जाडुँ गरणु राखवुं। जाडुँ को क्या कहते

हैं? मोटा, घट, घट। कपड़ा घट रखना कि जिससे अन्दर बारीक मच्छर, मच्छी घुस न जाय। ऐसा रखना, वैसा रखना। वह आत्मा कर सकता है तीन काल में तीन लोक में? किन्तु उस क्रिया के काल में जिसका दया का शुभभाव था कि प्राणी न मरे, ऐसे भाव का निमित्त देखकर इसने छाना और छानकर पिया ऐसा कहने में आता है। नवनीतभाई! आहाहा..! ऐसे में धनी बन गया, हम ऐसा करते हैं, हम ऐसा करते हैं, हम ऐसा करते हैं। परद्रव्य का कर सके तीन काल तीन लोक में?

अँगूली हिलने की क्रिया तेरे से हो, ऐसा तीन काल तीन लोक में बनता नहीं। सत्शास्त्र में व्यवहार के कथन आये कि मुनि को चलते हुए नीचे चींटी दिखे तो पैर ऊपर कर लेना, पैर ऊपर कर लेना। दो पैर के बीच में आये तो एड़ी घुमा देनी, बीचमें से वह जीव चला जाये। ऐसे चरणानुयोग में कथन आये। कहा है वैसा नहीं है। पैर तो पैरे के कारण वैसा हुआ है, मात्र जीव को ऐसा राग आया कि अरे..! यह प्राणी न मरे, उतना निमित्त देखकर पैर की क्रिया उसने की ऐसा कहने में आया है, परन्तु वह बात सत्य नहीं है। समझ में आया?

जैसी चाल पड़े ऐसी आवाज़ आये। देखो, बहुत लगाते हैं, कितना लगाते हैं ताराचंदजी। पूरा शरीर डोलता है न। होता है कि नहीं उसमें? क्या है यह? अरे.. भगवान! वह क्रिया तो परमाणु की उस काल में ऐसी होनेवाली थी। आत्मा की इच्छा हुई इसलिये थप्पड से ऐसे पड़े, नहीं तो धीरे से ऐसे-ऐसे मारे, हराम बात है, यहाँ तो कहते हैं। आहाहा..!

तब ऐसे कथन क्यों आये? रामचंद्रजी जैसे महापुरुष जब बाहर से--वनवास से आये, शांतिनाथ भगवान के मंदिर में.. अपने यहाँ है न (चित्र)? देखो! शांतिनाथ भगवान। हाथ में .. लेकर, उस भव में तो मोक्ष जाना है। रामचंद्रजी वनवास भोगकर जब अयोघ्या में प्रवेश करते हैं, उसके पहले बाहर शांतिनाथ भगवान का मंदिर है उसमें प्रवेश करते हैं। सीताजी, लक्ष्मण और राम। ऐसी भक्ति करते हैं, ... ओहो..! त्रिलोकनाथ शांतिप्रभु! आप के कारण मुझे शांति हुई है। ऐसा कथन करने में आता है। ऐसा नहीं है, किन्तु अपनी निवृत्ति के शांतिकाल में निमित्त देखकर ऐसा कथन किया है। और करताल दो हाथ डालकर बजाते हैं न? करताल बजाते हैं न तुम्हारे? अँगूली भी आत्मा हिलाये ऐसा कहना वह व्यवहारनय का कथन है, यानी कि ऐसा नहीं है। आहाहा..! जगत को... 'निश्चय और व्यवहारनय में जगत भरमायो है।' समयसार नाटक में इस अधिकार में कहा है। सर्वत्र अध्यवसाय में। अरे.. जगत! निश्चय क्या और व्यवहार क्या? निश्चय सच्चा और व्यवहार आरोपित कथन है। नहीं, वह कहते हैं, आरोपित कथन भी सच्चा है, उपचार भी सच्चा है। अरे..! उपचार सत्य हो सकता

नहीं। सच्चा एक निश्चय का कथन है वह सच्चा है।

तब वह कहते हैं, व्यवहार की मुख्यता से क्यों कहा? निमित्तादि की अपेक्षा से यह उपचार किया है ऐसा जानना। और '**इसप्रकार जानने का नाम ही...**' देखो! '**जानने का नाम ही दोनों नयों का ग्रहण है।**' जानने का नाम ग्रहण है, आदरने का नाम नहीं। निश्चयनय का विषय आदरणीय और व्यवहार का आदरणीय, ऐसे नहीं। '**इसप्रकार जानने का नाम ही दोनों नयों का ग्रहण है। तथा दोनों नयों के व्याख्यान को...**' शास्त्र में दो नय का ज्ञान का कथन चले, उन '**दोनों नयों के व्याख्यान को समान...**' निश्चय भी बराबर समकक्षी।

४०० वर्ष पहले यह बात चली है, बनारसीदास के समय में। बनारसीदास ने जब यथार्थ बात को प्रकाशित की, अरे..! जितना व्यवहार शुभाशुभ परिणाम और देहादि की क्रिया बाहर की असद्भुत व्यवहार, उसमें से कुछ भी जीव को लाभ माने, जितना व्यवहार का भेद है उतना मिथ्यात्व का भेद है। समझ में आया? बनारसीदास ने कहा। सामने एक पक्ष खड़ा हुआ, नहीं, एक पक्ष खड़ा हुआ। वह कहे कि निश्चय। यह कहता है कि निश्चय और व्यवहार दोनों समकक्षी। समकक्षी समझे? दोनों पहलू समान है न? समकक्षी। ऐसा नहीं है। समकक्षी नहीं है। अभी यह बात चलती है। अखबार में सब आ गयी है। कहो, समझ में आया?

निश्चय का कथन है उसे सत्य मानना और व्यवहार के कथन को झूठा कहकर ऊडा देना, तो फिर नारकी जीव, मनुष्य जीव, देव जीव, पर्याप्त जीव वह सब नहीं रहेगा। लेकिन कहाँ है? सुन न, वह तो निमित्त का ज्ञान (कराने को कहा है)। नारकी का जीव, मनुष्य का जीव,.. जीव नारकी का है? जीव तो जीव का है। वह तो शरीर देखकर कथन किया है। ऐसा ही मान ले कि यह घोड़े का जीव, गाय का जीव, स्त्री का जीव, पुरुष का जीव (तो मिथ्यात्व है)। नहीं, वह तो शरीर शरीर में हो, उस शरीर के बहाने जीव की पहिचान करायी। उसको, चैतन्य जीव कह दे, और ब्रह्म और अद्वैत मान न ले इसलिये कहा कि ये शरीर में रहा वह जीव, ये शरीर में रहा वह जीव, एकेन्द्रिय में रहा वह जीव, पंचेन्द्रिय में रहा वह जीव। ऐसा कहकर आत्मा की निमित्त से पहिचान करवायी है। किन्तु शरीर है वह जीव नहीं है।

दोनों को '**समान सत्यार्थ...**' देखो! वज़न यहाँ है, वज़न यहाँ है। समान और सत्यार्थ। निश्चय का कथन भी सच्चा और व्यवहार का उसके जैसा। और व्यवहार का कथन भी सच्चा और निश्चय का कथन भी सच्चा। '**ऐसे भी है,...**' निश्चय है वह ऐसे है और व्यवहार है वह भी सच्चा है। '**इसप्रकार भ्रमरूप प्रवर्तन से तो दोनों**

नयों का ग्रहण करना नहीं कहा है।' व्यवहार के कथन भी सच्चे और निश्चय के भी सच्चे, ऐसा भगवान ने दो नयों का ग्रहण करना इस प्रकार तो नहीं कहा है। बाबुभाई! देखो, ये बड़े महोत्सव के समय में यह वस्तु बहुत अच्छी आ गयी है। जल्दी पकड़ में नहीं आये। जिसे अभ्यास न हो, अभी निश्चय-व्यवहार क्या (यह मालूम नहीं हो), वह तो ओघेओघे अँध होकर संप्रदाय में पड़े हो, और माने कि कुछ धर्म होता है। कुछ दया पालेंगे, कुछ दान करेंगे, कुछ व्रत पालेंगे तो धर्म होगा। धूल में भी धर्म नहीं है, सुन न। ऐसा तो अज्ञानरूपी भैंसा अनंत बार खा गया तेरा पोळा। पोळा समझते हो? घास का पोळा होता है न? अज्ञानरूपी भैंसा, तेरी क्रिया राग की, पुण्य की, दया की, दान की ऐसी क्रिया अज्ञानरूपी भैंसा निगल गया है अनंत बार। उससे आत्मा को कोई लाभ नहीं हुआ। समझ में आया?

इसलिये कहते हैं कि दोनों नयों के व्याख्यान को समान जानना, वह झूठा है, समान नहीं है। फेरफार हो दोनों में, दोनों नयों का विरोध है। सच्चा है ऐसा नहीं है। एक निश्चय का कथन सच्चा, व्यवहार का कथन झूठा। इसप्रकार '**दोनों नयों का ग्रहण करना नहीं कहा है।**' अब प्रश्न उठा।

'**यदि व्यवहारनय असत्यार्थ है...**' आप तो व्यवहारनय असत्य और झूठी साबित की, फूँक मारकर ऊडा दी। फूँक मारकर पर्वत ऊडाया। फू... लेकिन फूँक से पर्वत नहीं ऊड़ता। शिष्य प्रश्न करता है। आप तो व्यवहारनय को असत्यार्थ झूठी कहते हो। शास्त्र में जितने व्यवहार के कथन आये, निमित्त के, उपचार के, पर आरोपित, पर कारण और इसमें कार्य हुआ ऐसे, समझ में आया? भगवान मिले तो श्रेणिक राजा को तीर्थंकर गोत्र बँधा। भगवान मिले तो श्रेणिक राजा ने क्षायिक समकित प्राप्त किया। वह सब शास्त्र के कथन आप असत्य ठहराते हो, झूठे ठहराते हो। शिष्य कहता है। '**असत्यार्थ है, तो उसका उपदेश जिनमार्ग में किसलिये दिया?**' ऐसे कथन क्यों लिखे? जमुभाई! देखो, यह लिखा। अब हमें उसमें समझना पड़ता है। एक कह दिया होता तो...। किन्तु ऐसा नहीं चलता। संक्षिप्त व्याख्या करने को व्यवहारनय के कथन, लंबी व्याख्या करने को बहुत लंबा व्याख्यान चलता है। हिंमतभाई ने पंचास्तिकाय की नोट में बहुत लिखा है। समझ में आया?

'**यदि व्यवहारनय असत्यार्थ है, तो उसका उपदेश जिनमार्ग में किसलिये दिया?**' असत्य का उपदेश क्यों दिया? प्रेमचंदजी! निमित्त से होता नहीं है तो निमित्त से हुआ, ऐसा कथन क्यों लिखा? कर्म के कारण रखड़ता नहीं, तो कर्म के कारण रखड़ता है ऐसा कसलिये लिखा? पर के कारण लाभ नहीं होता है तो, पर के कारण लाभ होता है, ऐसा किसलिये लिखा? शिष्य को प्रश्न तो हो न? '**उसका उपदेश**

जिनमार्ग में किसलिये दिया? एक निश्चयनय ही का निरूपण करना था।' आप तो व्यवहार को झूठी झहराते हो, निश्चय को सत्य ठहराते हो। तो झूठे का कथन ही किसलिये किया? कहो, प्रश्न बराबर है कि नहीं? सुन, सुन।

'**समाधान :-- ऐसा ही तर्क समयसार में किया है।**' तू कहता है ऐसा तर्क शास्त्र में चला है, वहाँ उत्तर दिया है :--

जह णवि सक्कमणज्जो अणज्जभासं विणा उ गाहेउं।
तह ववहारेण विणा परमत्थुवएसणमसक्कं।।८।।

'**अर्थ :-- जिस प्रकार अनार्य अर्थात् म्लेच्छ को म्लेच्छभाषा बिना अर्थ ग्रहण कराने में कोई समर्थ नहीं है;...**' एक म्लेच्छ हो, वहाँ कोई ब्राह्मण या साधु गये। स्वस्ति ऐसा कहा। वह स्वस्ति का अर्थ समझता नहीं है। स्वस्ति। क्या कहते हैं ये, स्वस्ति? टग-टग, टग-टग देखता रहता है, ये क्या कहते हैं? इतना जरूर है देखनेवाला,... शास्त्र में ऐसी शैली ली है कि ये कहनेवाला झूठा है ऐसा नहीं, क्या कहता है हमें कुछ समझ में नहीं आता है। ऐसी जिसकी जिज्ञासा है। ये क्या कहते हैं? फिर वही ब्राह्मण अथवा साधु कहते हैं, देख भाई! स्वस्ति का अर्थ सु-अस्ति, तेरा कल्याण होओ, ऐसा अर्थ होता है। स्वस्ति का अर्थ नहीं समझा तो उसका, चलती भाषा में वह समझे ऐसा अर्थ किया कि तेरा कल्याण होओ। हें! आहाहा..! नेत्रमें से हर्ष के आँसु बहने लगे। स्वस्ति शब्द सुनकर कुछ समझ में नहीं आता था। लेकिन, तेरा कल्याण होगा, ऐसा उसमें कहने में आता है। (ऐसा समझा तो) हर्ष होता है। आहा..!

ऐसे '**जिस प्रकार अनार्य अर्थात् म्लेच्छ को म्लेच्छभाषा बिना अर्थ ग्रहण कराने में कोई समर्थ नहीं है,...**' म्लेच्छभाषा बिना। उसकी भाषा ऐसी करनी पड़े, उसके जैसी करनी पड़े। समझ में आया? ये बच्चे लोग घोड़े से खेलते हैं न? लकड़ी का घोड़ा। लकड़ी का घोड़ा हाथ में रखकर चलता है न? उसका बाप दस शेर, आधा मण आम लेकर आये और वह चौखट में खेल रहा हो, तो उसका बाप क्या कहे? ए.. लड़के! घोड़ा दूर रख। क्योंकि उसको अन्दर घोड़े का रटन चल रहा है। तेरा घोड़ा दूर कर, चल आम खाने को। पोपटभाई! कहे कि नहीं? घोड़ा मानता है वह? उसका बाप लकड़ी को घोड़ा मानता है? पैर में बिच्छु काटा हो तो चलने में वह लकड़ी का घोड़ा काम आता होगा? इस प्रकार जैसे बालक को घोड़े का रटन चल रहा है, इसलिये उसका बाप भी कहता है कि घोड़ा दूर कर। ऐसे अज्ञानी म्लेच्छवाला, उसे व्यवहार की भाषा बिना समझाया नहीं जाता। नरभेरामभाई! आहाहा..!

मुमुक्षु :-- ...

उत्तर :-- वह समझे तब इसने समझाया ऐसे कहने में आया। वह सब बात दूसरी है।

'**जिस प्रकार अनार्य अर्थात् म्लेच्छ को म्लेच्छभाषा बिना अर्थ ग्रहण कराने में कोई समर्थ नहीं है; उसी प्रकार व्यवहार के बिना परमार्थ का उपदेश अशक्य है;...**' भेद करके समझाना पड़े कि शरीर जीव है, यह जीव है। शरीर कहाँ जीव था? जीव तो जुदी वस्तु है। राग के कारण आत्मा को लाभ होता है। राग सूचक है कि ऐसा राग हो वहाँ निश्चयमोक्षमार्ग अन्दर वर्तता है। निश्चयमोक्षमार्ग जहाँ वर्तता हो वहाँ निमित्त राग ऐसा बताता है, नैमित्तिक की प्रसिद्धि करता है। समझ में आया?

जहाँ नव तत्त्व की व्यवहारु सच्ची श्रद्धा या सात तत्त्व की श्रद्धा, अरिहंत देव, गुरु निर्ग्रंथ चारित्रवंत और शास्त्र, उनकी श्रद्धा का प्रकार का राग वर्तता हो वह निमित्त ऐसा प्रसिद्ध करता है। अकेला निमित्त नहीं, निमित्त प्रसिद्ध करे तो दूसरी चीज है, उसके पीछे जिसे रागरहित आत्मा की निश्चय श्रद्धा, ज्ञान, रमणता हुई है, उसे वह राग प्रसिद्ध करता है। परन्तु राग स्वयं धर्म का कारण नहीं है। समझ में आया? व्यवहारमोक्षमार्ग निश्चयमोक्षमार्ग की प्रसिद्धि करता है कि यहाँ व्यवहार के पीछे निश्चय का परिणमन निरंतर चालू है। क्या कहा, समझ में आया इसमें?

जहाँ सच्चे सर्वज्ञ के छः द्रव्य की श्रद्धा, नव तत्त्व की श्रद्धा, व्यवहार राग और पंच महाव्रत का पालन और सर्वज्ञ द्वारा निरूपित शास्त्रों का ज्ञान, ऐसे विकल्प का जहाँ रटन चल रहा है, उसके पीछे एक विकल्प रहित अन्दर निश्चय श्रद्धा, ज्ञान और रमणता चलती है उसको वह विकल्प प्रसिद्ध करता है कि यहाँ ऐसा है। लेकिन विकल्प द्वारा वह मोक्षमार्ग प्रगट होता है, ऐसा है नहीं।

मुमुक्षु :-- ...

उत्तर :-- वह झूठा नहीं, प्रसिद्ध करता है। झूठा प्रसिद्ध करता है कि जगत में दूसरा सच्चा है। ऐसा। क्या (कहा)? यह झूठ बोलनेवाला है ऐसा सिद्ध करनेपर साथ में दूसरा मनुष्य है वह झूठ बोलनेवाला नहीं है, ऐसा सिद्ध करता है।

मुमुक्षु :-- जरूरत तो पड़ी।

उत्तर :-- वह प्रसिद्ध करता है कि दूसरी चीज है। इस प्रकार निमित्त प्रसिद्ध करता है कि अन्दर दूसरी एक दशा है। व्यवहार प्रसिद्ध करता है कि निश्चय अन्दर है। इतना बताने को व्यवहार का उपदेश आचार्यों को भी करना पड़ा है। समझ में आया?

क्योंकि '**व्यवहार के बिना परमार्थ का उपदेश अशक्य है;...**' क्या कहे उसको? आत्मा,

आत्मा करे तो क्या समझ में आये? आत्मा.. आत्मा.. क्या आत्मा लेकिन? कैसा आत्मा होगा? सर्वव्यापक होगा? एक गुणवाला होगा? अनंत शक्तिवान होगा? कितने में रहता होगा? इसलिये आत्मा को व्यवहार से उसे समझाना पड़े। देख भाई! जो जानता है न अन्दर, वह आत्मा। देखता है न, वह आत्मा। स्थिर होता है न, वह आत्मा। अन्दर ज्ञान की झलक प्रगट दिख रही है वह आत्मामें से आ रही है। समझ में आया? इस प्रकार उसको उसके द्वारा वह बताना है। भेद करके अभेद चीज बताने को व्यवहार आता है, लेकिन वह व्यवहार आदरणीय नहीं है। आहाहा...! ऐसा व्यवहार आदरणीय नहीं है? ऐसा ज्ञान कराये उसे कि देख भाई! आत्मा चैतन्यप्रभु है, हाँ! अल्प अंश जो बाहर दिखता है विकास का, वह पूर्ण अंश का एक भाग है। अल्प जो तुझे विश्वास आता है न? वह विश्वास का कण, अन्दर त्रिकाल श्रद्धागुण को धारण करनेवाला एक आत्मा, उसमें से आता है। अंश द्वारा या राग द्वारा, भेद द्वारा वस्तु को बतानी है, परन्तु वह भेद और राग और निमित्त आदरणीय नहीं है। समझ में आया इसमें कुछ? क्या हो? लोगों को ज्ञान कम हो गया, सर्वज्ञ की लक्ष्मी चली गयी, केवलज्ञान (रहा नहीं)। जैसे बाप जाये, पुंजी जाये तो लड़कों में तकरार हो। पैसा हो तब तक दिक्कत नहीं आती, दो-पाँच लाख इधर-ऊधर होते हैं। लेकिन पैसा जाये, बाप जाये, लड़के को छ-आठ, विखवाद।

इस प्रकार भगवान त्रिलोकनाथ सर्वज्ञ की अनुपस्थिति और जगत के प्राणियों की वर्तमान पर्याय में बहुत की कम (हो गयी), इसलिये इन नयों के कथन का झघड़ा ऐसी खडा हुआ, झघड़ा। समझ में आया? पिता की मौजूदगी हो तो कहे, बड़े भाई! आप को मकान दिया था वह बात बराबर, लेकिन वह गहने पिताजी ने मेरे लिये दिये थे, हाँ! मकान आप को दिया था, लेकिन वह बड़ा अच्छा गहना पचास हज़ार का घर में है वह मुझे दिया था। किस की साक्षी? पिताजी चले गये। समझ में आया? छोटे का माने नहीं।

इस प्रकार सर्वज्ञ द्वारा उपदिष्ट नयों का, निश्चय-व्यवहार, स्व और पर किस कहते हैं उसका ज्ञान, सर्वज्ञ चले गये, छद्मस्थ रहे, अल्प पात्र जीव रहे, उसको यह समझने के लिये नय का ... हो गयी। जो कथन व्यवहार से निश्चय को समझाने के लिये किये, वह गले का फँदा हो गया। उसने पकड़ा व्यवहार को। आचार्य कहते हैं, व्यवहार के बिना उपदेश अशक्य है। '**इसलिये व्यवहार का उपदेश है।**'

'**तथा इसी सूत्र की व्याख्या में ऐसा कहा है कि**' देखो! '**निश्चय को अंगीकार करने के लिये...**' भगवान आत्मा अभेद को समझाने के लिये। उसी प्रकार प्रत्येक परमाणु अभेद है उसको समझाने को पर्याय से बात करते हैं। '**व्यवहार द्वारा**

उपदेश देते हैं;...' निश्चय अंतर, अंगीकार अभेद चिदानंमूर्ति आत्मा एकरूप वस्तु है, उसका अंतर अनुभव कर, उसकी श्रद्धा कर, उसका भान कर और स्थिर हो। वह बताने को व्यवहारनय है, व्यवहार द्वारा उपदेश देते हैं। '**परन्तु व्यवहारनय है सो अंगीकार करने योग्य नहीं है।**' हैं? पुस्तक है कि नहीं? शांतिभाई देखो! यह समयसार की बात है।

कुन्दकुन्दाचार्य भगवान महाविदेह क्षेत्र में त्रिलोकनाथ सर्वज्ञ परमात्मा विराजमान हैं उनके पास आठ दिन गये थे, आठ दिन। पंचम काल के मुनि, जिनको भगवान की भेंट यात्र इस भव में हुई। भगवान के पास आठ दिन रहे, यहाँ आकर यह समयसारादि शास्त्र बनाये। और बात को जगत के सामने बराबर जाहिर की। सुन! सर्वज्ञ परमात्मा व्यवहार के कथनों को झूठा कहते हैं, वह दूसरों को मात्र निश्चय का ज्ञान कराने के लिये कथन हैं, वह आदरणीय नहीं है। समझ में आया?

परन्तु वह '**व्यवहारनय है सो अंगीकार करने योग्य नहीं है।**' कहो, समझ में आया? उपदेश दिया व्यवहार का, परन्तु अंगीकार करने योग्य नहीं है। तो बोलते क्यों हो? ऐसा कहे। लो, शास्त्र में ऐसा आये कि वचनगुप्ति से बड़ा लाभ होता है। उपदेशक बोले, वचनगुप्ति से बड़ा लाभ होता है। श्रोता ऐसा कहे, वचनगुप्ति से यदि लाभ होता है तो आप क्यों बोलते हो? आप को विरोध होता है। अरे.. सुन न, उलटा। तू कुछ समझा नहीं। उसका अभिप्राय क्या है वह तुझे सत्य ज्ञात करवाता है। विकल्प उठा है, वाणी के काल में वाणी है। परन्तु अभिप्राय में, वाणी में विकल्प उठता है वह न हो, और स्थिर होऊँ ऐसा उसका अभिप्राय है। वह अभिप्राय जगत समक्ष जाहिर करने में भाषा में तो ऐसा ही आये। ऐसा ले कि, वचनगुप्ति का वचन तो आप बोलते रहते हो। स्वरूपभाई! क्या करना? कहो। अरे.. भगवान! तत्त्वउपदेशक, तत्त्व के उपदेशक ज्ञानी कैसे होते हैं और किस प्रकार ज्ञात हो, यह तुझे मालूम नहीं है। उलटे से ही शुरूआत करे कि आप ऐसा क्यों करते हो? वाणी बन्द करने में लाभ है कि नहीं? तो आप वाणी बन्द कर दो न। अरे.. भगवान! वह तो निर्णय करवाना चाहते हैं। वाणी तो वाणी के कारण निकले, परन्तु वाणी के काल में वह विकल्प है शुभ बोलने का, उसको भी टालकर स्वरूप में स्थिर होना, ऐसा निर्णय करवाना चाहते हैं। ऐसा समझे नहीं और सामनेवाले का गला पकड़े। चंदुभाई! उसका गला ही पकड़े, लो।

व्यवहारनय उपदेश देने को, निश्चय को समझाने को कहते हैं, परन्तु व्यवहार है सो अंगीकार करने योग्य नहीं है। देखो, यह गाथा चलती थी तब एक वकील थे। वह कहते थे, देखो! इस गाथा में व्यवहार का कहा है। बड़े सोलिसीटर थे। इस

गाथा में कहा है। यह तो बहुत साल पहले की बात है। २१ वर्ष हुए। समझ में आया? २१ वर्ष पहले कहा, इस गाथा में तो व्यवहार को स्थापन किया है। लेकिन किस प्रकार स्थापन किया है? व्यवहार से आत्मा, ज्ञान-दर्शन-चारित्र का भेद करके समझाना, इतना व्यवहार है। लेकिन वह भेद आदरणीय नहीं है। सुननेवाले को भी भेद का लक्ष्य छोड़कर अभेद (अंगीकार) करने जैसा है। क्या हो लेकिन? वाणी का झघड़ा, सत्य को समझने की लायकात प्रगट करे नहीं तो तीर्थंकर जैसे समझाये तो कोई समझे, ऐसी ताकात है नहीं। समझ में आया?

तब उसका एक प्रश्न होता है कि '**व्यवहार बिना निश्चय का उपदेश कैसे नहीं होता? और व्यवहारनय कैसे अंगीकार नहीं करना?**' जब कि आपने स्थापित किया, जरूरत तो स्थापित करी कि व्यवहार बिना निश्चय सच्ची वस्तु उसे समझायी नहीं जाती। इसलिये व्यवहार द्वारा समझाते हैं। समझाते हैं तो व्यवहार अंगीकार क्यों नहीं करना? जिससे समझाया जाात है उसको अंगीकार क्यों नहीं करना? इस प्रश्न का उत्तर आचार्य देंगे...

(श्रोता :-- प्रमाण वचन गुरुदेव!)

वीर सं.-२४८८, चैत्र सुद-१२, सोमवार,
दि. १६-४-१९६२,
सातवाँ अधिकार, प्रवचन नं. १८

यह मोक्षमार्गप्रकाशक, पंडित टोडरमल ने हज़ारों शास्त्रों की संधि का, खातावही करके, जैसे आदमी खातावही करता है न? ऐसे सब मेल किया है। उसमें सातवाँ अध्याय चलता है। सातवेँ अध्याय में जैन में जन्म होने के बावजूद, निश्चय और व्यवहार के कथन शास्त्र में आवे, उसका मेल करे नहीं और निश्चय की बात भी सच्ची और व्यवहार की भी सच्ची, इस प्रकार दोनों में भ्रमणा करे तो वह भी सत्य मार्ग को प्राप्त नहीं कर सकता। समझ में आया?